IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नवयथार्थवाद- एक समानांतर सिनेमाई आंदोलन

(Neorealism-A parallel cinematic movement)

Veena shivhare
Assistant professor
History
Gov.model college
Shahpura,dindori(MP)

एब्स्ट्रैक्ट:

नवयथार्थवादी आंदोलन का प्रारंभ इटली में दूसरे महायुद्ध के ठीक बाद हुआ। इस आंदोलन ने सिनेमा के व्याकरण को नया रूप दिया, जिसे सौंदर्यशास्त्र आंदोलन के रूप से जाना जाता है। सन 1945 से प्रारंभ यह आंदोलन फ्रांस तथा यूरोप तक ही सीमित नहीं रहा; वरन इसका विश्वव्यापी प्रभाव पड़ा। नवयथार्थवादी आंदोलन एक बंधन मुक्त सामूहिक आंदोलन था, जिसने बहुत कम अवधि में भी अपनी पैतृक संपदा के द्वारा फिल्मकारों को चुनौती के लिए संभावनाओं का व्यापक क्षेत्र प्रदान किया। नवयथार्थवादी सिनेमा इन अर्थों में नया था की अब तक की फिल्मों में यथार्थ को दिखाने के लिए कृत्रिम परिवेश तैयार किया जाता था; परंतु नव यथार्थवादी सिनेमा में यथार्थ को दिखाने के लिए सच्ची लोकेशन और गैर पेशेवर कलाकारों का प्रयोग किया जाने लगा।

यदि नवयथार्थवादी सिनेमा की पृष्ठभूमि पर गौर करें तो इसके निशान हमें प्रथम विश्व युद्ध के बाद से ही दिखाई देते हैं। क्योंकि अब पुराने विचारों का पुनर्मूल्यांकन तथा नए विचारों का उदय होने लगा था साथ ही मानव सापेक्ष चिंतन की शुरुआत ने इसके उदय में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस समय भले ही सिनेमा मूक था पर उसने सोचना शुरू कर दिया था। नवयथार्थवादी फिल्मों का शूटिंग स्थल लोकल स्टूडियो के बाहर प्रायः वास्तविक घटनास्थल होता था। अभिनेता और कलाकार अर्द्ध व्यवसायिक होते थे। कहानी सीधी-सादी होती थी, जिसका विषय उपेक्षित वर्ग होता था। जिसकी स्थिति एकदम असहाय और निर्धन होती थी और जो सामान्य सुख सुविधाओं से नितांत वंचित होते थे।

उद्देश्य:

सामाजिक सोद्देश्यता पर बल देने वाला यह नवयथार्थवादी दौर सिनेमा की भाषा, विषय, शैली, निर्माण तकनीक प्रत्येक अंग में मूलभूत परिवर्तन करने वाला आंदोलन था। सीमित बजट के साथ असीमित आजादी वाले इस नवयथार्थवादी आंदोलन ने सिनेमा के शिल्प एवं संवेदना दोनों को ही परिवर्तित किया। नवयथार्थवादी सिनेमा का उद्देश्य सिनेमा को व्यक्ति और समाज के निकट स्थापित करके इन्हें आडंबरहीन परिदृश्य में प्रस्तुत करना है।इस लेख के माध्यम से वास्तविकता के इस सिनेमा की वर्तमान प्रासंगिकता को बताने का प्रयास किया गया है।

कीवर्ड्स:

नव यथार्थवाद, न्यू वेव, समानांतर सिनेमा, कला सिनेमा, यथार्थवाद, गांभीर्य, मानववाद, प्रकृतिवाद, प्रमाणिकता।

भूमिका:

नवयथार्थवाद, NEOREALISM शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। नवयथार्थवाद को विभिन्न विषयों के परिप्रेक्ष्य में अलग अलग तरीके से परिभाषित किया गया है; किंतु यदि नव यथार्थवाद के केंद्रीय स्वर को देखें तो उसे "प्रमाणिकता का सामान्य परिवेश" के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। नवयथार्थवाद वास्तविकता के धरातल पर पलने वाली एक ऐसी विचारधारा है जिसने ना केवल दर्शन, अंतरराष्ट्रीय संबंध, राजनीति शास्त्र इत्यादि पक्षों को बल्कि कला के विभिन्न रूपों जैसे चित्रकारी,नाटक, लेखन तथा सिनेमा को भी प्रभावित किया।

नवयथार्थवाद, सिनेमा जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आया। नवयथार्थवादी सिनेमा को विभिन्न देशों में अलग-अलग संज्ञाओं से संदर्भित किया जाता है। जैसे इटली में निओरिअलिज्म (निओरिअलिज्म,neorealism), फ्रांस में न्यू वेव(ला नुएल वाग,la nouvelle vague), जापान में न्यू वेव(नवेरा बाजू, number bagu) एवं भारत में समानांतर सिनेमा अथवा कला सिनेमा।

संचार के इस सबसे सशक्त और बेहतर माध्यम की ताकत का उपयोग सभी देशों ने अपने पक्ष में करना प्रारंभ कर दिया। नव यथार्थवादी सिनेमा के वैश्विक उत्थान का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि द्वितीय विश्व युद्ध में इटली, फ्रांस, जापान इत्यादि पर पड़े आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक प्रभावों ने सिनेमा जगत को भी प्रभावित किया। इसने सिनेमाई सोच,प्रस्तुतीकरण के साथ-साथ सिनेमा की तकनीक में भी क्रांतिकारी परिवर्तन किए।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान स्टूडियो को गोदामों की तरह उपयोग किया जाने लगा एवं बाद में अर्थाभाव के कारण स्टूडियो संचालित करना असंभव हो गया, तो निर्देशकों को स्टूडियो की चारदीवारी से बाहर आकर आम लोगों के बीच गैर पेशेवर अभिनेताओं के साथ फिल्म निर्माण प्रारंभ करना पड़ा। इन परिस्थितियों ने सिनेमा को तत्कालिक समाज के आइने के रूप में अभिव्यक्त किया।

विशेषताएं:

नवयथार्थवाद अथवा समानांतर सिनेमा, सिनेमा जगत की एक विशिष्ट अवधारणा है। जिसका जन्म सिनेमा के मूक दौर में ही होने लगा था, किंतु उसने पूर्ण आकार बोलते युग में लिया। चार्ली चैपलिन की कई फिल्मों में नवयथार्थवाद के तत्व दिखाई पड़ते हैं। नवयथार्थवाद का कोई तयशुदा फार्मूला नहीं होता है, इसमें प्रत्येक फिल्मकार अपने अनुभव, अपनी विचारधारा तथा सिनेमा कला की अपनी समझ के अनुसार अपना एक मार्ग चुनता है। जहां तक अभिनय का प्रश्न है समानांतर सिनेमा में अभिनय इतना सहज, सरल और स्वाभाविक होता है कि पता ही नहीं चलता कि पर्दे पर अभिनय है या जीवन का एक अंश। व्यवसायिक सिनेमा स्वभाव से लाउड होता है, उसमें पात्रों के साथ-साथ परिवेश भी बोलता है। पर इस मायने में नव यथार्थवाद थोड़ा खामोश रहना ही पसंद करता है। यहां कैमरा अधिक बोलता है, पात्र कम बोलते है।

समानांतर सिनेमा समाज के उपेक्षित वर्गो की समस्याओं, अपेक्षाओं और उसकी हताशा को बखूबी व्यक्त करता है। आश्चर्यजनक तथ्य यह है की व्यवस्था विरोध का यह सिनेमा लगभग पूरी दुनिया में सरकारी संरक्षण में ही विकसित हुआ है। यह सिनेमा जीवन के बीच रहकर उसके विश्लेषण और उसके संघर्षों का अध्ययन है। यदि नव यथार्थवादी अथवा समानांतर सिनेमा आंदोलनों पर दृष्टि डालें तो यह पता चलता है इसकी प्रवृत्ति किसी एक देश या महाद्वीप में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में अपना वजूद कायम किए हुए थी। इटली,फ्रांस, अमेरिका से शुरू होकर इस आंदोलन का विस्तार धीरे-धीरे भारत, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया,जापान,ईरान आदि सभी देशों में हुआ।

नवयथार्थवादी सिनेमा यद्यपि नामकरण के दृष्टिकोण से क्षेत्रवार भिन्नतायें रखता है। तथा प्रत्येक देश के नव यथार्थवादी सिनेमा की अपनी विशेषताएं है। किंतु तत्कालीन परिस्थितियों से उपजे नवयथार्थवादी सिनेमा का मूल तत्व गांभीर्य,

मानववाद,प्रकृतिवाद, प्रमाणिकता एवं यथार्थवाद ही है जो हमें प्रत्येक स्थान पर देखने को मिलता है। विभिन्न देशों का नवयथार्थवादी सिनेमा एक दूसरे से प्रेरित भी हुआ और प्रेरणा स्रोत भी बना। उदाहरण स्वरूप फ्रेंच पॉलिटिक्स रिअलिज्म ने इटालियन निओरिअलिज्म को प्रेरणा दी इसके पश्चात इटालियन निओरिअलिज्म, फ्रेंच न्यू वेव एवं भारतीय समानांतर सिनेमा का प्रेरणा स्रोत भी बना। फ्रेंच न्यू वेव ने आगे 1960 के दशक में न्यू जर्मन सिनेमा और जापानी सिनेमा को भी प्रभावित किया।

इटालियन निओरिअलिज्म:

इटली के सिनेमा जगत की शुरुआत 1910 की "ला कदूत दित्रोई" से मानी जाती है, जिसने पूरे यूरोप में इटालियन सिनेमा को पहचान दिलाई। परंतु वास्तव में इटालवी सिनेमा ने दुनिया को जो देन दी है वह है, नवयथार्थवाद। इटली में नवयथार्थवाद, मुसोलिनी सरकार की पराजय और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इटली की खराब आर्थिक स्थिति के कारण हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इटली के बड़े-बड़े स्टूडियो, सेना के गोदामों के रूप में इस्तेमाल होने लगे। फलस्वरुप इटालवी निर्देशकों को विवश होकर सड़कों पर लोगों के बीच रहकर शूटिंग करनी पड़ी। इस प्रकार अब तक की विश्व सिनेमा जगत की फिल्मों के कृत्रिम घटना प्रसंगो से अलग इटली में अर्थाभाव के कारण यथार्थ को चित्रित करने के लिए असली लोकेशन और आम लोगों के बीच से ही गैर पेशेवर कलाकारों को चुना गया, इसलिए इसे सिनेमाई नवयथार्थवाद कहा गया।

नवयथार्थवाद इटली में हुए सांस्कृतिक परिवर्तन और सामाजिक प्रगति का संकेत था जिसने उस समय की इटली की मनःस्थिति,उसके रोजमर्रा के जीवन, गरीबी, दमन अन्याय आदि को पूरी सच्चाई के साथ नये रूप में व्यक्त किया। इटालवी नवयथार्थवाद के विकास में सर्वाधिक योगदान 19वीं सदी के साहित्य आंदोलन, जॉ रेनुआ की यथार्थवादी दृष्टि, आईजेन्स्टाइन की प्रयोगधर्मिता और अमेरिकी फिल्मों की नैतिक गंभीरता ने दिया।

इस नव यथार्थवाद से प्रेरित होकर कई निर्देशकों जैसे वित्तोरिया दि सिका, राबर्तो रोजेलिनी, लुशीनो विश्कोंति, कार्लो लिजानी, फेदेरिको फेलिनी आदि ने बेहतरीन समानांतर फिल्में बनाई। जिनमें रोम ओपन सिटी, शूशाइन, पाईजॉ, बाइसिकल थीब्स, जर्मन ईयर जीरो आदि प्रमुख है। जिनमें बाइसिकल थीब्स, रोमन की भीषण बेरोजगारी एवं निर्धनता के बीच एक व्यक्ति के आर्थिक संघर्षों की कहानी पर आधारित है। इसके साथ ही आम इंसान के जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़े इस नवयथार्थवादी सिनेमा ने ना केवल इटली के लोगों को बल्कि विश्व के लोगो को उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, विधिक आदि समस्याओं को उन्हीं की भाषा में, उन्हीं के बीच रहकर फिल्म निर्माण करके उन्हें जागरूक किया एवं इनके समाधान के लिए भी प्रेरित भी किया।

फ्रेंच न्यू वेव:

सिनेमा रूपी इस तीसरी आंख से दुनियाँ को सबसे पहले फ्रांस के ल्युमियर बंधुओं ने ही परिचित कराया। इसके बाद से ही पूरे विश्व में सिनेमा के क्षेत्र में एक होड़ लग गयी। यह फ्रेंच सिनेमा ही था जिसने इसे मनोरंजन और तकनीक के ऊपर उठाकर रचनात्मक स्वरूप दिया और फिल्मों को विचारोत्तेजक बनाया। फ्रेंच निर्माताओं ने सिनेमा को साहित्य जैसा खुला और अभिव्यक्तिपरक विधा बनाने का कार्य किया। आगे चलकर इटली के नवयथार्थवाद से प्रेरित होकर फ्रेंच सिनेमा की मूल धारा के समानांतर एक नई धारा का उदय हुआ, जिसे फ्रेंच न्यू वेव के नाम से जाना गया।

यह फ्रेंच न्यू वेव परंपरागत मार्ग के खिलाफ एक आंदोलन था तथा इस आंदोलन को आकार "केहियर्स डु सिनेमा" नामक फिल्मी पत्रिका से जुड़े निर्देशकों के समूह जिसमें फ्रांस्वा त्रुफ़, आंद्रे बजीन, ज्याकस रिवतें, क्लोउदे केब्रोल, जीन लुक गोददार, जेकस रोजियर, एरिक राइम, एलेन रेसनिस आदि थे। इन्होंने उपन्यासकारों तथा चित्रकारों की भांति सिनेमा को निर्देशकों का सृजन माना है।

फ्रेंच न्यू वेव अपने समय के सिनेमा से तकनीकी और प्रयोग के तौर पर काफी अलग था। कम से कम रोशनी, लंबे दृश्यों का प्रयोग आदि के कारण इसे कैमरा स्टाइल सिनेमा भी कहा गया । असली आवाज, सच्ची लोकेशन, कम बजट, कहानी के तयशुदा ढांचे से अलग हाल ही विकसित होते कथा और संवाद, अति सामान्य नायक, आदि के साथ अर्थपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति करना इस नई धारा के सिनेमा की विशेषतायें है। इस प्रकार कैब्रोल की "ले बेउ सर्ज" से शुरू इस नये फ्रेंच सिनेमा के सफर में फॉर हंड्रेड ब्लोज, हिरोशिमा मोन एमहोर, ब्रेथलेस, लेस बोन्नस फेम्मस, लेस क्रेन्ट्रेसेन्ट कूप, क्लियो 5 से 7 आदि अलग-अलग

मुद्दों पर आधारित इन फिल्मों ने फ्रांस में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ ही इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक अलग पहचान दिलाई।

भारतीय समानांतर सिनेमा:

भारत के परिप्रेक्ष्य में नवयथार्थवादी सिनेमाई आंदोलन के बीज हमें आजादी के पहले की फिल्मों में देखने को मिलते हैं, किंतु नव यथार्थवाद की सशक्त उपस्थिति बंगाली सिनेमा में दिखती है। जहां सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक,मृणाल सेन जैसे फिल्मकारों ने नव यथार्थवाद को अपनी फिल्मों पाथेर पांचाली और मेघे ढाका तारा आदि के जरिए पेश किया। भारत में समानांतर सिनेमा, फ्रेंच और जापानी न्यू वेव सिनेमा के समकालीन ही विकसित हुआ। सत्यजीत रे ने इटालियन निर्देशक 'वित्तोरिया दि सिका' की "बाइसिकल थीब्स" और फ्रेंच फिल्मकार जॉन रेनर की "द रिवर" को अपनी पहली फिल्म "पाथेर पंचाली" का प्रेरणा स्रोत बताया है। इतालवी भाषा में बनी "बाइसिकल थीब्स" को भारत के पहले फिल्म समारोह में दिखाया गया। जिसके बाद इसने भारतीय सिनेमा को गहराई से प्रभावित किया। ख्वाजा अहमद की "मुन्ना", राज कपूर की "जागते रहो" और विमल राय की "दो बीघा जमीन" आदि फिल्मों पर इटालियन नव यथार्थवाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

समानांतर सिनेमा अथवा कला सिनेमा, भारतीय वाणिज्यिक सिनेमा या मुख्यधारा के सिनेमा से इस अर्थ में अलग था कि इसके विषय मनोरंजन और मुनाफा कमाने से इतर यथार्थवाद, मानववाद और नैसर्गिकता से प्रेरित थे। समानांतर सिनेमा व्यक्तिवाद पर जोर देते हुए काल्पनिक कहानियों से दूर आम आदमी की सामाजिक आर्थिक समस्याओं, अपेक्षाओं और उसकी हताशा को बखूबी व्यक्त करते हुए भारतीय जीवन की जटिलताओं और विविधता को रेखांकित करता है। इस समानांतर सिनेमा में एक नए अंदाज में सामाजिक और राजनीतिक घटनाक्रमों को सेल्यूलाइट पर उतारने की कोशिश की गई।

इस प्रकार ग्रामीण परिवेश, गंभीरता, यथार्थता,सहजता, संवेदनशीलता और मानव केंद्रित चिंतन आदि के साथ-साथ सीमित बजट भी समानांतर सिनेमा के प्रमुख विशेषताएं हैं। बंगाली सिनेमा के बाद इस शैली का रुख हिंदी सिनेमा की ओर हुआ। यद्यपि वास्तविक भारत के कुछ अलग इससे पहले भी हमें समय-समय पर कई फिल्मों में देखने को मिली जैसे दुनिया ना माने, धरती के लाल, नीचा नगर आवारा, दो बीघा जमीन, जागते रहो,प्यासा इत्यादि। परंतु नव यथार्थवाद को सही अर्थों में अभिव्यक्त करने वाली पहली फिल्म 1969 में मृणाल सेन द्वारा निर्देशित फ़िल्म "भुवन शोम" को कहा जाता है। इसके अलावा अंकुर, मंथन, भूमिका निशांत, मंडी,कलयुग,जुनून,अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है, गर्म हवा,अरविंद देसाई की अजीब दास्तान, उसकी रोटी, सारा आकाश, वाटर, फायर इत्यादि फिल्मों का निर्माण करने वाले निर्देशकों जैसे श्याम बेनेगल, मृणाल सेन, सईद अख्तर मिर्जा,गोविंद निहलानी, मणि कौल, गिरीश कर्नाड, बासु चटर्जी, रितुपर्णो घोष, अदूर गोपालकृष्णन,मीरा नायर, दीपा मेहता आदि के सिनेमा का आधार नव यथार्थवाद था।

प्रासंगिकता:

1969 से प्रारंभ भारतीय सिनेमा की यह धारा मुख्यधारा के सिनेमा के समक्ष एक चुनौती बनकर खड़ी हुई। जो 1990 के बाद पूंजीवादी युग आने के कारण लड़खड़ा जरूर गया, परंतु किसी भी आंदोलन का असर या कोई भी प्रवृत्ति पूर्णतया खत्म नहीं होती। नवयथार्थवाद भी समय-समय पर भारतीय सिनेमा में दिखता रहा है। नई पीढ़ी के फिल्मकार अनुराग कश्यप की फिल्म "गैंग्स ऑफ वासेपुर" जैसी फिल्मों में भी यह प्रवृत्ति दिखती है। जो इस नवयथार्थवादी सिनेमा की वर्तमान प्रासंगिकता को दर्शाता है। आजकल वेब सीरीज के दौर में भी कई लोग नवयथार्थवाद के अंतर्गत की गई प्रस्तुतियों का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं; यद्यपि नग्नता और हिंसा परोसकर जल्दी प्रसिद्धि पाने की ललक में उनका यथार्थ वास्तविकता से हटकर फंतासी की दुनिया में चला जाता है। फिर भी नव यथार्थवादी आंदोलन की प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी, क्योंकि इस आंदोलन ने फिल्मों में मोहकता और चमक-दमक के तत्व को दूर कर उन्हें प्रासंगिक, उद्देश्यपूर्ण एवं सामाजिक सरोकारो से युक्त, अभिव्यक्त करने वाला संचार का माध्यम बनाया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- अग्रवाल विजय, सिनेमा और समाज, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1993
- दत्ता संगीता, श्याम बेनेगल, लोटस कलेक्शन, पाली बुक, 2003

- दास विनोद, भारतीय सिनेमा का अंतः करण, मेधा बुक्स, दिल्ली,2003
- चौकसे जयप्रकाश,सिनेमा जीवन की पाठशाला, बेनटेन बुक्स, भोपाल, 2011
- ब्रह्मानंद अजय, सिनेमा की सोच, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,2013
- खान शमीम, सिनेमा में नारी, ग्रंथ अकादमी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
- चंद्र मुदिता/ समर्पिता जूही,नारी अस्मिता और भारतीय हिंदी सिनेमा, भावना प्रकाशन,दिल्ली,2015
- प्रियदर्शन, नए दौर का सिनेमा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
- सिंह संचिता, भारतीय फिल्मों में महिला किरदार, नीलकंठ प्रकाशन, 2017
- कुमार अरुण, श्याम बेनेगल:भारतीय संवेदना और अधिकारों का सिनेमा,साहित्यकार,2017
- नाथ हूब, समानांतर सिनेमा, स्टोरी मिरर,इन्फोटेक प्रा.लि. 2017
- खरे विष्णु, सिनेमा समय,अनन्य प्रकाशन, दिल्ली 2018
- शर्मा पंकज,हिंदी सिनेमा की यात्रा, अनन्य प्रकाशन दिल्ली, 2018
- कांत प्रकाश,हिंदी सिनेमा: सार्थकता की तलाश, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली,2019
- गौरीनाथ, हिंदी सिनेमा में हाशिए का समाज, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली,2019
- Joshi Lalitmohan, Indias Are House Of Cinema, British Film Institute,2009
- Rasmussen Dana, India's New Wave Cinema: All About Parallel Cinema, Bibliobazaar, 2010